Original Article
ISSN(Online): 2584-0983
https://shikshasamvad.com/

Shiksha Samvad
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
© SHIKSHA SAMVAD|VOLUME-04| ISSUE-01| SEPTEMBER- 2026
Impact Factor: RPRI 3.79, SJIF-5.23
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.43

पारिवारिक विघटन के कारण और परिणामः जनपद श्रावस्ती के सन्दर्भ में

डॉ. श्याम नारायण वर्मा
सहायक आचार्य,समाजशास्त्र विभाग
महामाया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,श्रावस्ती।

सारांश–

प्रस्तुत शोधपत्र में उत्तर प्रदेश के अतिपिछड़े क्षेत्र जनपद श्रावस्ती में किसी भी व्यक्ति की प्रथम पाठशाला कही जाने वाली इकाई परिवार में होने वाले विघटन का अध्ययन किया गया है। श्रावस्ती जनपद का अधिकतर हिस्सा ग्रामीण परिवेश से आच्छादित है यहां संयुक्त परिवार तेजी से टूट रहे हैं। उक्त शोध में 100 परिवारों से साक्षात्कार व कुछ अन्य प्रविधियों के माध्यम से प्रयास किया गया है कि आखिर श्रावस्ती में परिवार क्यों तेजी से टूट रहे हैं, इस पारिवारिक टूटन का बच्चों बुजुर्गों व महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ रहा है इसको जानने के साथ–साथ इस समस्या से निजात पाने के लिए क्या–क्या उपाय हो सकते है। अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष सामने आया है कि यहां पर पारिवारिक विघटन के लिए आर्थिक समस्या, प्राकृतिक समस्यायें, पलायन, बेरोजगारी,बाल विवाह, आदि जिम्मेदार हैं।

मुख्य शब्दः पारिवारिक विघटन, संयुक्त परिवार, आर्थिक समस्या, प्राकृतिक समस्यायें, पलायन, बेरोजगारी,बाल विवाह ।

प्रस्तावना–

समाज की सबसे छोटी परन्तु सबसे महत्व पूर्ण इकाई परिवार है जनपद श्रावस्ती में पहले संयुक्त परिवार की मजबूत परम्परा थी लोग बड़े परिवारों में गौरव के साथ रहा करते थे बच्चे दादी–नानी, चाच–चाची, की कहानियां बिना सुने नहीं रह पाते थे, एक साथ घर के आंगन में बैठकर भोजन किया करते थे, बड़े बुजुर्गों की किसी भी बात को इनकार करने का अभिप्राय था घर में भूकंप का आ जाना बड़े बुजुर्गों की बातों को पूर्णतया शिरोधार्य करना हर सन्तान के अनिवार्य था उनकी बाते न केवल ध्यान से सुनी जाती थीं बल्कि उन्हें अपने जीवन में एक आदर्श की भांति उतार कर नयी पीड़ी अपने भविष्य को संवारती थी।

सभी अपने बड़े बुजुर्गों की आदेशों का पालन अक्षरशः किया करते थे संपत्ति पर पूरा अधिकार घर के मुखिया का हुआ करता था नाते रिश्तों का निर्धारण नयी पीढ़ी स्वयं नहीं कर सकती थी। जर जमीन में बड़े जो जिसे दे देते थे लोग बिना किसी प्रश्न को उसे स्वीकार कर लेते थे। अर्थात घर का मुखिया पूर्णतया केन्द्रीय स्थिति में था सभी उसी में आस्था रखते थे उसके

आदेश का पालन बिना किसी कुतर्क के मानते थे। एक भी कदम बड़ों की अनुमति के बिना बाहर नहीं निकलता था आखिर आज क्या हो गया कि वही बुजुर्ग अकेला जीवन जीने को विवश हो गया। उनकी कोई बात सुनने वाला नहीं है, भाई–भाई में बटवारा होने लगा है। यहां तक कि पुत्र और पिता में अनबन बढ़ती जा रही है आये दिन परिवारों का विघटन बढ़ता जा रहा है घरेलू हिंसा, संपत्ति का बंटवारा तेजी से बढ़ता जा रहा है इत्यादि समस्यायें श्रावस्ती में और भी गंभीर होती जा रही है, शायद इसका कारण है यहां रोजगार का न होना, बढ़ती महगाई, खेती पर निर्भरता, पलायन, अन्तरपीढी संघर्ष इत्यादि। पारिवारिक विघटन केवल परिवार का विखराव ही नहीं है बल्कि यह सामाजिक विघटन का महत्वपूर्ण कारण है।

शोध का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध के निम्नवत उद्देश्यों का उल्लेख कुछ इस प्रकार है।

01 जनपद श्रावस्ती में परिवार के विखराव के प्रमुख कारणों का पता लगाना।

02 पारिवारिक विखराव का किन–किन लोगों पर विशेष रूप से कुप्रभाव पड़ता है इसका पता लगाना।

03 पारिवारिक विखराव को कैसे रोका जाये इसके व्यावहारिक उपाय सुझाना।

04 पारिवारिक विखराव से होने वाली सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक क्षति का पता लगाना।

जनपद श्रावस्ती का परिचय–

शिवालिक पर्वत की तलहटी में बसा जनपद श्रावस्ती बहराइच जनपद का 1997 के पहले प्रमुख हिस्सा हुआ करता था यह जनपद भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के उत्तरी छोर पर अवस्थित है जनपद का जिला मुख्यालय भिनगा शहर है। यह राप्ती नदी के दोनो किनारों पर रचा वसा ग्रामीण परिवेश वाला जिला है जिसकी ख्याति बौद्व जैन धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थलों के रूप में पूरे विश्व में फैली हुई है इस जनपद की सीमाएं नेपाल देश से सटी हुई हैं इसके पूरब में बलरामपुर जनपद, पश्चिम में बहराइच जनपद, दक्षिण में गोंडा जनपद की सीमाएं हैं। पौराणिक मान्यतायें बतलाती हैं कि सूर्यवंशी राजा श्रावस्त ने इस प्राचीन नगर की स्थापना की थी जिसके ही नाम पर बाद में चलकर इसका नाम श्रावस्ती पड़ा था यह भी प्रमाण मिलता है कि यहां पर भगवान बुद्व ने अपने जीवन के सबसे अधिक 24 चतुर्मास अर्थात 24 वर्षावास विताये थे। यहां जेवन विहार, कच्ची कुटी, गंध कुटी, पक्की कुटी, जैन मंदिर, वर्मा मंदिर, लंका मंदिर, सहेट–महेट, थाई मंदिर, प्राचीन पीपल का वृक्ष, अंगुलिमाल की गुफा, विपश्यना केन्द्र इत्यादि स्थल देश ही नहीं दुनिया के तमाम बोद्व–जैन अनुयायियों के लिए पूजनीय हैं जहां पर प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में लोग दुनिया के कोने–कोने से आते हैं। यह जनपद प्राकृतिक रूप से काफी धनी और संपन्न है। जहां पर लगभग हर प्रकार की फसले उगाई जाती है फल शाक सब्जी, के उत्पादन के साथ–साथ साखू सागौन की इमारती लकड़ी के अनुपम जंगल सभी सैलानियों का मन मोह लेते हैं। 2011 की जनगणना के मुताबिक यहां की कुल जनसंख्या

1,117,361 थीं। यहां का लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर 881 महिलाओं का रहा है। साक्षारता दर पर अगर निगाह डाली जाये तो कुल साक्षरता दर वर्तमान समय में लगभग 52 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता लगभग 60 तो महिला साक्षरता लगभग 40 प्रतिशत है।

पारिवारिक विघटन के कारण–

पारिवारिक विघटन के विभिन्न कारणों का क्रमशः उल्लेख इस प्रकार है।

01. **आर्थिक परिस्थितियां–** जमीन का टुकड़े–टुकड़े में तेजी बंटना, कर्ज की मार, प्रछन्न बेरोजगारी, सीमित संसाधनों के कारण परिवार के केवल एक दो सदस्यों की आय होने के कारण परिवार तेजी से टूट रहे हैं।
02. **बाल विवाह–** बाल विवाह की समस्याओं से अभी भी यह जनपद मुक्त नहीं हो पाया है अत्यन्त कम उम्र में यहां विवाह का चलन रहा है जिसके कारण तन–मन से अविकसित बच्चे अपनी घर गृहस्थी को ठीक से नहीं संभाल पाते है और परिवार से अलग घर बसाकर रहने लगते हैं।
03. **मद्यपान–** पारिवारिक विघटन के लिए मद्यपान इस जनपद का प्रमुख कारण है लोग अपनी आय का अधिकतर पैसा नशे और जुये पर खर्च कर देते हैं जिसका कुप्रभाव परिवार पर पड़ता है कलह पैदा होती है जिसके कारण परिवार का विघटन होता रहता है।
04. **अवैध संबंध–**अशिक्षित और गरीब जनपद होने के कारण यहां पर अवैघ संबंधों के चलते परिवार तेजी से टूट रहे हैं। प्रायः अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए महिला पुरुष इस दलदल में फंस जाते है जिसका असर परिवार पर पड़ता है पति–पत्नी में लड़ाई, पिता–पुत्र में लड़ाई, सास–बहू में लड़ाई परिवार को विघटन की ओर ले जाते हैं।
05. **संपत्ति विवाद, अशिक्षा का अभाव, महिलाओं की निम्न स्थिति, अन्तर्पीढ़ी संघर्ष, प्राकृतिक आपदायें, इत्यादि तमाम समस्यायें पारिवारिक विघटन के उत्तरदायी है।**

विश्लेषण–

अध्ययन से पता चला कि श्रावस्ती में पुराने संयुक्त परिवार से लगभग 75 प्रतिशत परिवार अलग हुए हैं। तो बेरोजगारी के कारण पलायन के कारण लगभग 50 प्रतिशत परिवार विघटन का शिकार हुए हैं जमीनी विवाद के कारण लगभग 35 प्रतिशत परिवारों में बटवारा हुआ है, तलाक और अलगाव के कारण लगभग 20 प्रतिशत अकेले बुजुर्गों से युक्त परिवार लगभग 31 प्रतिशत विद्यमान हैं

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जनपद श्रावस्ती में उपस्थित संयुक्त परिवार सिर्फ भावनाओं और वैचारिकी में हो रहे बदलाव से ही नहीं टूट रहे हैं बल्कि तमाम प्रकार की विपदाओं, मजबूरियों, प्राकृतिक कारणों इत्यादि के कारण भी टूट रहे हैं संयुक्त परिवारों के टूटने से सबसे अधिक कुप्रभाव बच्चों, बूढ़ों

और महिलाओं पर पड़ता है।

परिणाम–

उपरोक्त अध्ययन से निम्नलिखित परिणाम सामने आते हैं

01, पारिवारिक विघटन से बच्चों की परवरिश पर प्रतिकूल असर पड़ता है उनको उचित संस्कार नहीं मिल पाता जिसके कारण वे गलत दिशा में चले जाते हैं।

02, बड़े बुजुर्गों की देखरेख की समस्या आ जाती है उन्हें असहाय जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

03, पारिवारिक विघटन से परिवार की महिलायें सबसे अधिक प्रभावित होती हैं उन्हें तलाकशुदा जिन्दगी जीने को मजबूर होना पड़ता है अलग–थलग जीवन जीने के साथ उनके ऊपर बच्चों की परवरिश का अतिरिक्त भार आ जाता है साथ ही उनकी सामाजिक सुरक्षा को खतरा पैदा हो जाता है।

04, पारिवारिक विघटन से समाज और संस्कृति पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है तमाम प्रकार से संस्कृति का संरक्षण संयुक्त परिवारों के द्वारा किया जाता है जिनके विखर जाने के कारण हमारी पुरातन संस्कृति को भी खतरा उत्पन्न हो जाता है।

निष्कर्ष–

जनपद श्रावस्ती में पारिवारिक विघटन मात्र पारिवारिक समस्या ही नहीं है बल्कि यह आर्थिक, धार्मिक, और सामाजिक समस्या भी है यहां पर जब तक पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं होगे, शिक्षा की माकूल उपलब्धता नहीं होगी, सांगठनिक ढांचे में बढ़ोत्तरी नहीं होगी, आपसी भाईचारे का भाव पैदा नहीं किया जायेगा, पलायन रोका नहीं जायेगा, नशा खोरी पर रोक नहीं लगायी जायेगी, प्राकृतिक आपदाओं को रोकने के लिए उचित प्रबन्ध नहीं किया जायेगा, जनजागरण नहीं चलाया जायेगा, माता पिता बच्चों को पर्याप्त समय नहीं देगें तब तक परिवार टूटते रहेगें और इसको बचाने के लिए केवल कानून और सरकारी मशीनरी ही नहीं बल्कि बच्चों को उचित संस्कार और सभी को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सुरक्षा, धार्मिक सुरक्षा इत्यादि की भी जरूरत होगी।

सुझाव–

श्रावस्ती जनपद को अगर पारिवारिक विघटन से मुक्त करना है तो उसके लिए निम्नवत सुझावों पर अमल करना होगा–

01. सरकार द्वारा चलायी जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं को वास्तविक रूप से धरातल पर उतारा

02. समय–समय पर संयुक्त परिवार के लाभ से जुड़ी हुई संगोष्ठियों का आयोजन ग्राम सभा स्तर पर किया जाये।
03. जमीनी विवादों के निपटारे के लिए गांव स्तर पर पंचायतों और लोक अदालतों का सुद्ढ़ किया जाये।
04. स्कूल कॉलेजों में नैतिक शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाये।
05. जुआ–खोरी पर रोक लगायी जाये, जगह–जगह पर नशा उन्मुलन केन्द्रों की स्थापना की जाये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

01. दुबे श्यामाचरण. भारतीय समाज।
02. के. एम. कपाड़िया, भारत में विवाह और परिवार।
03. जिनगणना रिपोर्ट 2011–जनपद श्रावस्ती।
04. जिला सांख्यिकी पत्रिकाः जनपद श्रावस्ती।
05. लवानिया,डॉ.एम.एम. एवं जैन शशि, ग्रामीण समाजशास्त्र।

Cite the Article:

वर्मा. डॉ. श्याम नारायण. (2026). पारिवारिक विघटन के कारण और परिणामः जनपद श्रावस्ती के सन्दर्भ में. Shiksha Samvad: International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1), 365–368**. DOI:** - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.43

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.